MODEL QUESTION PAPER SET- 1 : 2021 - 22

MM : 80 **HINDI THEORY** **Time : 3 Hrs**

SOLUTION

Entire Syllabus

(१) सूचना के अनुसार गद्य.पद्य की सभी कृतियों में आवश्यकता के अनुसार आकृतियों में ही उत्तर लिखना अपेक्षित हैं |

(२) सभी आकृतियों के लिए पेन का ही प्रयोग करें|

(३) आकृतियों में उत्तर पेन से ही लिखना आवश्यक हैं |

(४) व्याकरण विभाग में पूछी गई कृतियों के उत्तर के लिए आकृतियों की आवश्यकता नहीं हैं |

विभाग - १ : गद्य - अंक :

१ (अ)

१)

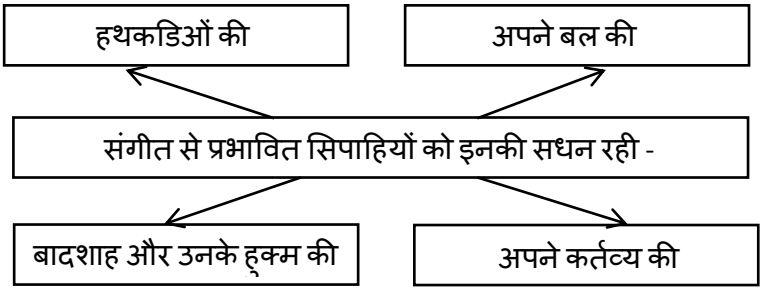

२) शब्द युग्म वाले शब्द :

१) जमीन - आसमान २) दम - के - दम

३) साथ - साथ ४) गाते - गाते

३) संगीत सुनकर मनुष्य अपनी सुध बुध खो बैठता है, क्योंकि संगीत एक ऐसी कला है जो अपनी तरंगों के माध्यम से मनुष्य के मन मस्तिष्क को आनंदित कर देती है। ... इससे सिद्ध होता है कि संगीत का प्रभाव केवल मनुष्यों पर ही नहीं पशुओं पर भी पड़ता है। इससे संगीत की व्यापकता का पता चलता है। संगीत में एक जादू सा प्रभाव होता है।

(आ) १)

I.

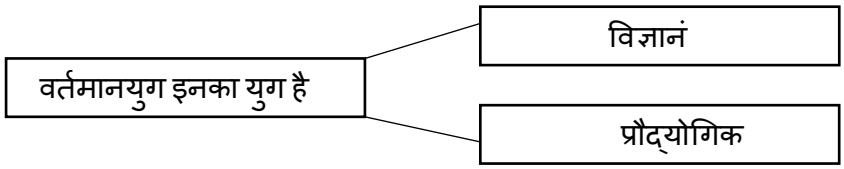

II. कारण :

इस युद्ध की पूर्वानुमानित परिकल्पना सैन्य एवं नागरिक अधिकारियों द्वारा की गयी है तथा कई देशों की कल्पित कथाओं में इसकी चर्चा की गयी है। ये अवधारणाएँ विशुद्ध पारंपरिक परिदृश्यों से लेकर परमाणविक शस्त्रों के सीमित उपयोग या सम्पूर्ण ग्रह के विनाश तक विस्तारित हैं।

हथियारों की दौड़ के विकास के साथ, सोवियत संघ के पतन और शीत युद्ध की समाप्ति के साथ, संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ के बीच एक सर्वनाश से सम्बंधित अंतर्भासी युद्ध ऊपर से देखने में तो विश्वसनीय माना

जाता रहा, हालांकि इसकी संभावना नहीं के बराबर थी। जबसे डूमैन का सिद्धांत सन् 1947 में कारगर हो गया, डूम्सडे क्लॉक ऐतिहासिक विश्व युद्ध III की प्रतीक बन गयी।

२) १) नीर = **पानी , जल** २) भयंकर = **भयावह**

३) उन्नति = **विकास** ४) बेशक = **निः संदेह**

३) 'पर्यावरण रक्षा में हमारा योगदान', इस विषय पर ४० से ५० शब्दों में अपने विचार लिखिए | २

आज पूरी दुनिया **पर्यावरण** प्रदूषण से पीड़ित है। पर्यावरण प्रदुषण अर्थात हवा में ऐसी अवांछित गैसों, धूल के कणों आदि की उपस्थिति, जो लोगों तथा प्रकृति दोनों के लिए खतरे का कारण बन जाए। वायु प्रदूषण का एक बड़ा कारण है औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाला धुआँ तथा रसायन। **पर्यावरण** की **रक्षा** में अपना **योगदान** देते हुए हमें प्लास्टिक का प्रयोग कम-से-कम करना चाहिए। रिसाइकल किए जा सकने वाली चीजों को फेंक नहीं देना चाहिए। जैसे अख़बार, कागज, गत्ते, काँच आदि। पेट्रोल, डीजल आदि के उपयोग में कमी करनी चाहिए। पर्यावरण की रक्षा करना हम सबका कर्त्तव्य है। पर्यावरण है तो हमारा जीवन है।

(इ)

१) संसार में पाप, अत्याचार और अन्याय का बोलबाला रहा है और आज भी वह वैसा ही है। इससे लोगों को मुक्ति दिलाने के लिए अनेक महापुरुषों, सुधारकों, समाज सेवकों एवं संत महात्माओं ने अथक प्रयास किया, पर वे अपने प्रयास में सफल नहीं हो पाए। उल्टे उन्हें समाज के लोगों की उपेक्षा तथा निंदा आदि का शिकार होना पड़ा और कुछ लोगों को अपनी जान भी गँवानी पड़ी। पर देखा यह गया है कि जीते जी जिन सुधारकों और महापुरुषों को समाज का सहयोग नहीं मिला और उनकी अवहेलना होती रही, मरने के बाद उनके स्मारक और मंदिर भी बने और लोगों ने उन्हें भगवान-सुधारक कह कर वंदनीय भी बताया।

यहाँ लेखक यह कहना चाहते हैं कि मरणोपरांत सुधारक का स्मारक-मंदिर बनना सुधारक और उसके प्रयासों दोनों की पराजय है। अच्छा तो तब होता, जब लोग सुधारक के जीते जी उसके विचारों को अपनाते और पाप, अत्याचार और अन्याय जैसी बुराइयों के खिलाफ संघर्ष में उसका सहयोग करते और समाज से इन बुराइयों के दूर होने में सहायक बनते। इससे सुधारक समाज को पाप, अन्याय, भ्रष्टाचार और अत्याचार जैसी बुराइयों से मुक्ति दिलाने में सफल हो सकता था। लोगों को सुधारक की उपेक्षा, निंदा अथवा उनके खिलाफ षड्यंत्र रचने के बजाय उनके अभियान में अपना पूरा सहयोग देना चाहिए। तभी समाज से ये बुराइयाँ दूर हो सकती हैं। यही इस पाठ का उद्देश्य है।

२) समय के साथ अपना अर्थ खो चुकी या वर्तमान प्रगतिशील समाज को पीछे ले जाने वाली समाज की कोई भी रीति-नीति रूढ़ि है। रूढ़ि स्थिर होती है। जबकि परंपरा समय के साथ अनुपयोगी हो गए मूल्यों को छोड़ती और उपयोगी मूल्यों को जोड़ती निरंतर बहती धारा परंपरा है। परंपरा गतिशील है। एक निरंतर बहता निर्मल प्रवाह, जो हर सड़ी-गली रूढ़ि को किनारे फेंकता और हर भीतरी-बाहरी, देशी-विदेशी उपयोगी मूल्य को अपने में समेटता चलता है।

३) सन 1930 से पहले प्रशीतन के लिए अमोनिया और सल्फर डाइऑक्साइड गैसों का इस्तेमाल किया जाता था, जो अत्यंत तीक्ष्ण होने के कारण मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक थीं। तीस के दशक में क्लोरो फ्लोरो कार्बन (सी. एफ. सी.) नामक यौगिक की खोज प्रशीतन के क्षेत्र में क्रांतिकारी उपलब्धि रही। ये रसायन रंगहीन, गंधहीन, अक्रियाशील होने के साथ ही अज्वलनशील होने के कारण आदर्श प्रशीतक माने गए। परिणामस्वरूप बड़े पैमाने पर सी एफ सी

यौगिकों का उत्पादन होने लगा और घरेलू कीटनाशक, प्रसाधन सामग्री, दवाएँ, रंग-रोगन, यहाँ तक कि रेफ्रिजिरेटर और एयरकंडिशनर में इनका खूब इस्तेमाल होने लगा।

(ई)

१) सुदर्शन ने मुंशी प्रेमचंद की लेखन परंपरा को आगे बढ़ाया है।

२) विभिन्न क्षेत्र में अग्रणी रही महिला के जीवन संघर्ष को चित्रित करना और वर्तमान नारी वर्ग के सम्मुख उनके आदर्श प्रस्तुत करना।

३) (१) भारत की प्रथम महिला
(२) स्वतंत्रता सेनानी लेखिकाएँ
(३) क्रन्तिकारी किशोरी
(४) स्वाधीनता सेनानी
(५) लेखक पत्रकार

४) कन्हैयालाल मिश्रजी कथाकार, निबंधकार एवं पत्रकार थे। आपकी भाषा मँजी हुई, सहज-सरल और मुहावरेदार है, जो कथ्य को दृश्यमान और सजीव बना देती है। आपके लेखन में तत्सम शब्दों का प्रयोग भारतीय चिंतन-मनन को अधिक प्रभावशाली बना देता है। आप एक सफल निबंधकार थे। आप में अपने विषय को प्रखरता से प्रस्तुत करने की सामर्थ्य है।

विभाग - २ : पद्य - अंक : २०

कृति : २ (अ) १)

I)

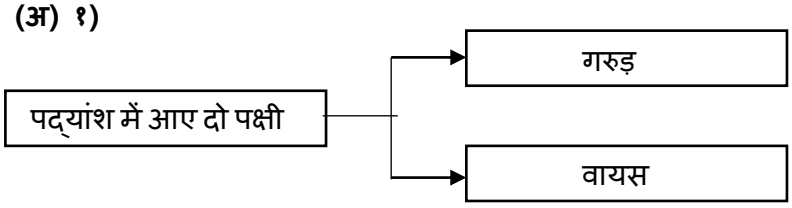

II) कारण

सरस्वती के भंडार को जैसे-जैसे खर्च किया जाता रहता है, वैसे-वैसे वह अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचता रहता है अर्थात उसमें वृद्धि होती रहती है। इसलिए सरस्वती के भंडार को अपूर्व कहा गया है।

२)

१. करतब - कार्य
२. देवल - मंदिर
३. काठ - लकड़ी
४. सौर - चादर

३) चादर देखकर पैर फैलाने का अर्थ है, जितनी अपनी क्षमता हो उतने में ही काम चलाना। यह अर्थशास्त्र का साधारण नियम है। सामान्य व्यक्तियों से लेकर बड़ी-बड़ी कंपनियाँ भी इस नियम का पालन करती हैं। जो लोग इस नियम के आधार पर अपना कार्य करते हैं, उनके काम सुचारु रूप से चलते हैं।

जो लोग बिना सोचे-विचारे किसी काम की शुरुआत कर देते हैं और अपनी क्षमता का ध्यान नहीं रखते, उनके सामने आगे चलकर आर्थिक संकट उपस्थित हो जाता है। इसके कारण काम ठप हो जाता है। इसलिए समझदारी इसी में है कि अपनी क्षमता का अंदाज लगाकर ही कोई कार्य शुरू किया जाए। इससे कार्य आसानी से पूरा हो जाता है। चादर देखकर पैर फैलाने में ही बुद्धिमानी होती है।

(आ) १)

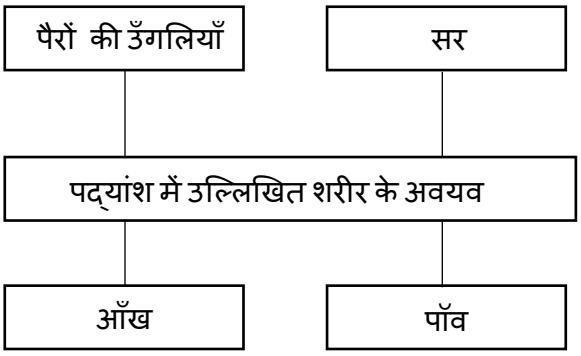

२) निम्नलिखित शब्दों के लिंग पहचानकर लिखिए :

१) किताब - स्त्रीलिंग २) साहूकार - पुल्लिंग

३) कंगन - पुल्लिंग ४) आँख – स्त्रीलिंग

३) क्रांति अर्थात बदलाव लाना। बदलाव शासन व्यवस्था के प्रति हो सकता है या फिर किसी सामाजिक प्रथा के विरोध में। क्रांति कभी भी अपने-आप नहीं आती। क्रांति के लिए मानव को ही प्रयास करना पड़ता है। कोई व्यवस्था अथवा रूढ़ि भले ही जर्जर हो चुकी हो, समाज के विकास के लिए अहितकर बन रही हो।

अगर हम उसे बदलने के लिए क्रांतिकारी कदम नहीं उठाएँगे, तो हमारा समाज प्रगति नहीं कर पाएगा, कूपमंडूक बना रहेगा। इतिहास साक्षी है कि जब-जब मानव ने नए सिद्धांतों को, नई खोजों को अपनाया, समाज निरंतर विकास के मार्ग पर आगे बढ़ता रहा।

(इ)

१) **रचनाकार का नाम :** त्रिलोचन (मूलनाम – वासुदेव सिंह)

२) **पसंद की पंक्तियाँ :** कविता की पसंद की । पंक्तियाँ इस प्रकार हैं :

जिसको मंजिल का पता रहता है,
पथ के संकट को वही सहता है,
एक दिन सिद्धि के शिखर पर बैठ
अपना इतिहास वही कहता है।

३) **पसंद के कारण :** प्रस्तुत पंक्तियों में यह बात कही गई है कि एक बार अपने लक्ष्य का निर्धारण कर लेने के बाद मनुष्य को हर समय उसको पूरा करने के काम में जी-जान से लग जाना चाहिए। फिर मार्ग में कितनी भी कठिनाइयाँ क्यों न आएँ, उन्हें सहते हुए निरंतर आगे ही बढ़ते रहना चाहिए। एक दिन ऐसे व्यक्ति को सफलता मिलकर ही रहती है। ऐसे ही व्यक्ति लोगों के आदर्श बन जाते हैं। लोग उनका गुणगान करते है और उनसे प्रेरणा लेते हैं।

४) **कविता की केंद्रीय कल्पना :** प्रस्तुत कविता में संघर्ष करने, अत्याचार, विषमता तथा निर्बलता पर विजय पाने का आवाहन किया गया है तथा समाज में समानता, स्वतंत्रता एवं मानवता की स्थापना की बात कही गई है।

अथवा

पेड़ होने का अर्थ कविता में कवि डॉ. मुकेश गौतम पेड़ के माध्यम से मनुष्य को मानवता, परोपकार आदि मानवोचित गुणों की प्रेरणा दे रहा है। मनुष्य जरा-सी प्रतिकूल परिस्थिति आने पर या किसी कार्य में मनचाही सफलता न मिलने पर हौसला खो बैठता है। पेड़ भयंकर आँधी-तूफान का सामना करता है, घायल होकर टेढ़ा हो जाता है, परंतु वह अपना हौसला नहीं छोड़ता।

पेड़ के हौसले के कारण शाखों में स्थित घोंसले में चिड़िया के चहचहाते छोटे-छोटे बच्चे सारी रात भयंकर तूफान चलते रहने के बाद भी सुरक्षित रहते हैं। सचमुच पेड़ का हौसला बहुत बड़ा है। पेड़ बहुत बड़ा दाता है। पेड़ की जड़, तना, शाखाएँ, पत्ते, फूल, फल और बीज अर्थात पेड़ का कोई भी भाग अनुपयोगी नहीं होता। अपने स्वार्थ के लिए पेड़ पर कुल्हाड़ी चलाने वालों, उसे काटने वालों के किसी भी दुर्व्यवहार व अत्याचार का पेड़ कभी बदला लेने का नहीं सोचता। वह तो जीवन भर देता ही रहता है।

हम श्वासोच्छ्वास के माध्यम से जो विषैली वायु बाहर छोड़ते हैं, पेड़ उसे स्वच्छ करके हमें स्वास्थ्यवर्धक वायु प्रदान करता है। पेड़ रोगों के लिए विभिन्न प्रकार की औषधियाँ देता है। मनुष्य समाज में किसी की शवयात्रा हो या कोई शुभ कार्य, या फिर किसी की बारात, पेड़ सभी को पुष्पों की सौगात देता है।

पेड़ कवि को कागज, कलम तथा स्याही, पेड़ वैद्य और हकीम को विभिन्न रोगों के लिए दवाएँ तथा शासन और प्रशासन के लोगों को कुरसी, मेज और आसन देता है। वास्तव में देखा जाए तो पेड़ की ऐसी कोई भी वस्तु नहीं है, जो मनुष्य के काम न आती हो।

पेड़ संत के समान है, जो दूसरों को देते ही हैं, किसी से कुछ भी अपेक्षा नहीं रखते। वास्तविकता तो यह है कि पेड़ दधीचि है। जिस प्रकार दधीचि ने देवताओं की रक्षा के लिए वज्रास्त्र बनाने के लिए जीते-जी अपनी अस्थियाँ भी दान कर दी थीं, उसी प्रकार पेड़ बिना किसी स्वार्थ के जीवन भर देता ही रहता है।

(ई)

१) नयी कविता में काव्य क्षेत्र में नए भाव को व्यक्त करने के लिए शिल्प पक्ष और भाव पक्ष के स्तर पर नए प्रयोग किये गए | नए प्रतीकों, उपमानों और प्रतिमानों को ढूँढा गया | परिणामस्वरूप नयी कविता आज के मनुष्य के व्यक्त जीवन का दर्पण और आस - पास की सच्चाई की तस्वीर बनकर उभरी |

२) गजल **'उर्दू'** इस भाषा का लोकप्रिय काव्य प्रकार है -

३) त्रिलोचन जी के दो काव्यसंग्रहों के नाम - (१) धरती (२) दिंगत

४) गुरुनानकजी की रचनाओंके नाम : गुरुग्रंथसाहिब आदि।

विभाग - ३ : विशेष अध्ययन - अंक : १०

कृति : ३ (अ)

१)

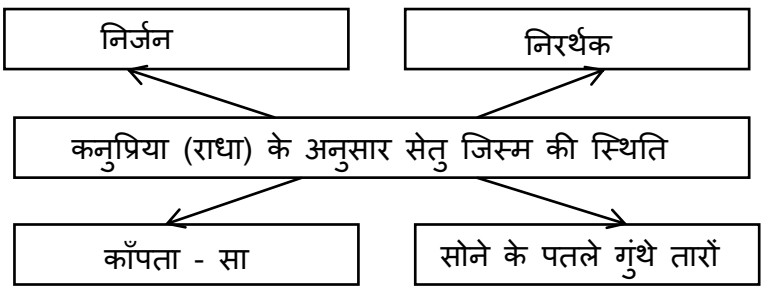

२) १) ऊपर × **नीचे** २) निरर्थक × **सार्थक**

३) पतला × **मोटा** ४) मृत्यु × **जन्म**

३) संसार में दो तरह के लोग होते हैं। एक कर्म करने वाले लोग और दूसरे भाग्य के भरोसे बैठे रहने वाले लोग। बड़े-बड़े महापुरुष, वैज्ञानिक, उद्योगपति, शिक्षाविद, देश के कर्णधार तथा बड़े-बड़े अधिकारी अपने कार्यों के बल पर ही महान कहलाए। कर्म करने वाले व्यक्ति ही अपने परिश्रम के फल की उम्मीद कर सकते हैं। हाथ पर हाथ रखकर भगवान के भरोसे बैठे रहने वालों का कोई काम पूरा नहीं होता।

निष्क्रिय बैठे रहने वाले लोग भूल जाते हैं कि भाग्य भी संचित कर्मों का फल ही होता है। किसान को अपने खेत में काम करने के बाद ही अन्न की प्राप्ति होती है। व्यापारी को बौद्धिक श्रम करने के बाद ही व्यवसाय में लाभ होता है। कहा भी गया है कि 'कर्म प्रधान विश्व करि राखा। जो जस करे सो तस फल चाखा।' इस प्रकार कर्म सफलता की ओर ले जाने वाला मार्ग है।

(आ)

१) **'कविने राधा के माध्यम से आधुनिक मानव की व्यथा को शब्द बद्ध किया है', इस कथन को स्पष्ट कीजिए।**

'कनुप्रिया' काव्य में राधा अपने प्रियतम कृष्ण के 'महाभारत' युद्ध के महानायक के रूप में अपने से दूर चले जाने से व्यथित है। वह इस बात को लेकर तरह-तरह की कल्पनाएँ करती है। कभी अपनी व्यथा व्यक्त करती है, तो कभी अपने प्रिय की उपलब्धि पर गर्व करके संतोष कर लेती है।

यह व्यथा केवल राधा की ही नहीं है। उन परिवारों के मातापिता की भी है, जिनके बेटे अपने परिवारों के साथ नौकरी व्यवसाय के सिलसिले में अपनी गृहस्थी के प्रति अपना दायित्व निभाने के लिए अपने माता-पिता से दूर रहते हैं। उनसे विछोह की व्यथा उन्हें भोगनी पड़ती है। भोले माता-पिता को लाख माथापच्ची करने पर भी समझ में यह नहीं आता कि सालों-साल तक उनके बेटे माता-पिता को आखिर दर्शन क्यों नहीं देते हैं।

पर वहीं उनको यह संतोष और गर्व भी होता है कि उनका बेटा वहाँ बड़े पद पर है, जो उसे उनके साथ रहने पर नसीब नहीं होता। इसी तरह किसी एहसान फरामोश के प्रति एहसान करने वाले व्यक्ति के मन में उत्पन्न होने वाली भावनाओं में भी राधा के माध्यम से आधुनिक मानव की व्यथा व्यक्त होती है।

२) राधा के लिए जीवन में प्यार सर्वोपरि है। वह वैरभाव अथवा युद्ध को निरर्थक मानती है। कृष्ण के प्रति राधा का प्यार निश्छल और निर्मल है। राधा ने सहज जीवन जीया है और उसने चरम तन्मयता के क्षणों में डूबकर जीवन की सार्थकता पाई है। अतः वह जीवन की समस्त घटनाओं और व्यक्तियों को केवल प्यार की कसौटी पर ही कसती है। वह तन्मयता के क्षणों में अपने सखा कृष्ण की सभी लीलाओं का अनुमान करती है।

वह केवल प्यार को सार्थक तथा अन्य सभी बातों को निरर्थक मानती है। महाभारत के युद्ध के महानायक कृष्ण को संबोधित करते हुए वह कहती है कि मैं तो तुम्हारी वही बावरी सखी हूँ, तुम्हारी मित्र हूँ। मैंने तुमसे सदा स्नेह ही पाया है और मैं स्नेह की ही भाषा समझती हूँ।

राधा कृष्ण के कर्म, स्वधर्म, निर्णय तथा दायित्व जैसे शब्दों को । सुनकर कुछ नहीं समझ पाती। वह राह में रुक कर कृष्ण के अधरों की कल्पना करती है... जिन अधरों से उन्होंने प्रणय के शब्द पहली बार उससे कहे थे। उसे इन शब्दों में केवल अपना ही राधन्... राधन्... राधन्... नाम सुनाई देता है।

इस प्रकार राधा की दृष्टि से जीवन की सार्थकता प्रेम की पराकाष्ठा में है। उसके लिए इसे त्याग कर किसी अन्य का अवलंबन करना नितांत निरर्थक है।

विभाग - ४ : व्यावहारिक हिंदी / अपठित गद्यांश / पारिभाषिक शब्दावली - अंक : २०

कृति : ४

(अ) प्रकाश आम्टे महाराष्ट्र के ऐसे एक शख्स है, जिन्होंने अपने घर के आंगन में शेर-तेंदुए और सांप पाल रखे हैं। वह उन्हें अपने हाथ से खाना खिलाते हैं। उनके अनुसार मनुष्य जैसे मनुष्य से दोस्ती करता है वैसे ही जानवरों से भी दोस्ती की जा सकती है या उन्हें पालकर उनके साथ रहा जा सकता है। बता दें कि प्रकाश आम्टे एक डॉक्टर भी हैं और साथ ही एक समाज सेवक है। उन्हें 2002 में 'पद्मश्री' और 2008 में 'रेमन मैग्सेसे पुरस्कार' भी मिल चुका है।

डॉक्टर प्रकाश आम्टे के पिता बाबा आम्टे ने महाराष्ट्र के गढ़चिरोली जिले के हेमलकसा कस्बे में लोक बिरादरी प्रकल्प की स्थापना की थी।

वे यहां स्थानीय आदिवासियों के विकास और चिकित्सा के लिए काम किया करते थे।

पिता बाबा आम्टे के निधन के बाद डॉ. प्रकाश और उनके बेटे अनिकेत और दिगंत, यहां की जिम्मेदारी संभालते हैं।

आम्टे जिस जगह रहते थे वहां जंगली जानवर भी रहते थे। लोग जानवरों का यहां आकर शिकार करते थे आम्टे घायल जानवरों इलाज किया करते थे।

डॉ. आम्टे ऐसे शख्स हैं, जो महाराष्ट्र के नक्सल प्रभावित इलाके में घने जंगल के बीच रहकर आदिवासियों को मेडिकल ट्रीटमेंट देने के साथ एजुकेशन भी देते हैं।

साथ ही डॉ. प्रकाश आम्टे ने लोगों द्वारा मारे गए जंगली जानवर के बच्चों के लिए अपने घर में एक एनिमल ऑर्फनेज (लावारिस जानवरों के लिए रहने का स्थान) बनाया है।

यह ऑर्फनेज उनके घर के आंगन में ही हैं, जहां आज भालू, तेंदुए, मगरमच्छ समेत 60 से भी अधिक जानवर पल रहे हैं।

अथवा

१)

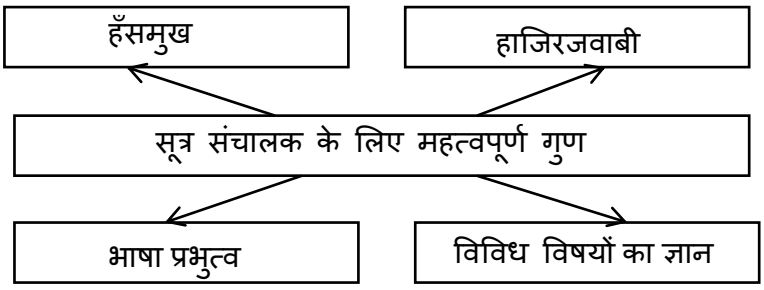

२) १) अतिथियों - **अतिथी** २) संभावना - **संभावनाएँ**

३) प्रयास - **प्रयासे** ४) पत्रिका - **पत्रिकाएँ**

३) सूत्र संचालन के इस क्षेत्र में व्यक्ति के भीतर कई गुणों का समावेश होना जरुरी है | दूरदर्शन पर कई चैनल , रेडिओ में समाजीक , शैक्षणिक , राजनितिक , कवी सम्मलेन जैसे कार्यक्रमों में मंच संचालक की अहम् भूमिका होती है| सूत्र संचालक अपनी मधुर आवाज से कार्यक्रम में चार चाँद लगा देता है | मैंने भी दूरदर्शन पर कई चैनलों में सूत्र संचालकों को देखा है | उनमें से मुझे सबसे अधिक प्रेरित करने वाले 'राघव जुयाल ' यह मंत्र संचालक है | यह अपने कार्य का प्रदर्शन 'डान्स' सो के द्वारा प्रस्तुत करते है | इनसे मुझे एक अच्छे सूत्र संचालक बनने की प्रेरणा मिलती रहती है |

(आ)

१) पल्लवन का अर्थ है विस्तार अथवा फैलाव। यह संक्षेपण का विरुद्धार्थी है। पल्लवन की विशेषताओं को इस प्रकार लिखा जा सकता है :

१. कल्पनाशीलता – पल्लवन करते समय लेखक कल्पनाशीलता का सहारा लेता है। कल्पना के सहारे सूक्ति अथवा उद्धरण का भाव विस्तार करता है। परंतु पल्लवन में विषय का विस्तार एक निश्चित सीमा के अंतर्गत किया जाता है।

२. मौलिकता – पल्लवन में मौलिकता का ध्यान रखा जाता है।

३. सर्जनात्मकता – पल्लवन में लेखक को सर्जनात्मकता का अवसर व संतोष दोनों मिलते हैं।

४. प्रवाहमयता – पल्लवन लेखन में प्रवाहमयता होना आवश्यक है। लेखक इस बात का ध्यान रखता है कि पाठक को पढ़ते समय बीच-बीच में किसी प्रकार का अवरोध अनुभव न हो।

५. भाषा-शैली – पल्लवन करते समय लेखक को भाषा ज्ञान व भाषा का विस्तार जानना आवश्यक है। साथ ही विश्लेषण, संश्लेषण, तार्किक क्षमता के साथ-साथ अभिव्यक्तिगत कौशल की आवश्यकता होती है।

६. शब्द चयन – पल्लवन में शब्द चयन का बहुत अधिक महत्त्व है। तर्कसंगत और सम्मत शब्दों का ही प्रयोग किया जाना चाहिए। लेखक को शृंखलाबद्ध, रोचक एवं उत्सुकता से परिपूर्ण वाक्य लिखने चाहिए। छोटे-छोटे वाक्यों या वाक्य खंडों में बंद विचारों को खोल देना, फैला देना, विस्तृत कर देना ही पल्लवन है।

७. क्रमबद्धता – पल्लवन में विचारों में, अभिव्यक्ति में क्रमबद्धता का बहुत अधिक ध्यान रखा जाता है।

८. सहजता – पल्लवन का सहज रूप सभी को आकर्षित करता है।

९. स्पष्टता – पल्लवन में स्पष्टता का होना अत्यावश्यक है। जिस भी विचार, अंश, लोकोक्ति आदि का पल्लवन किया जा रहा है, केंद्र में वही रहना चाहिए। पाठक को पल्लवन पढ़ते समय ऐसा प्रतीत न हो कि मूल विचार कुछ और है, जबकि पल्लवन का प्रवाह किसी अन्य दिशा में जा रहा है।

२) ब्लॉग अपना विचार, अपना मत व्यक्त करने का एक डिजिटल माध्यम है। ब्लॉग के माध्यम से हम जो कुछ कहना चाहते हैं, उसके लिए किसी से अनुमति लेने की आवश्यकता नहीं होती। ब्लॉग लेखन में शब्द संख्या का बंधन नहीं होता। हम अपनी बात को जितना विस्तार देना चाहें, दे सकते हैं।

डिजिटल माध्यम हैं। ब्लॉग, वेबसाइट, पोर्टल आदि अखबार, पत्रिका या पुस्तक हाथ में लेकर पढ़ने के स्थान पर उसे कंप्यूटर, टैब या सेलफोन पर पढ़ना डिजिटल माध्यम कहलाता है। इसके कारण लेखक और पत्रकार भी ग्लोबल हो गए हैं। इस माध्यम के द्वारा पूरी दुनिया की कोई भी जानकारी क्षण भर में ही परदे पर उपलब्ध हो जाती है। नवीन वाचकों की संख्या मुद्रित माध्यम के वाचकों से बहुत अधिक है। इस वर्ग में युवा वर्ग अधिक संख्या में हैं।

जस्टीन हॉल ने सन 1994 में सबसे पहले इस शब्द का प्रयोग किया। जॉन बर्गर ने इसके लिए वेब्लॉग शब्द का प्रयोग किया था। माना जाता है कि 1999 में पीटर मेरहोल्स ब्लॉग शब्द को प्रस्थापित कर उसे व्यवहार में लाए। भारत मे 2002 के बाद ब्लॉग लेखन आरंभ हुआ और देखते-देखते यह माध्यम लोकप्रिय हो गया। साथ ही इसे अभिव्यक्ति के नए माध्यम के रूप में मान्यता भी प्राप्त हुई।

अथवा

(आ) १) (आ) २९ २) (इ) पल्लवन ३) (अ) डिजिटल ४) (ई) शैक्षणिक

(इ)

१)

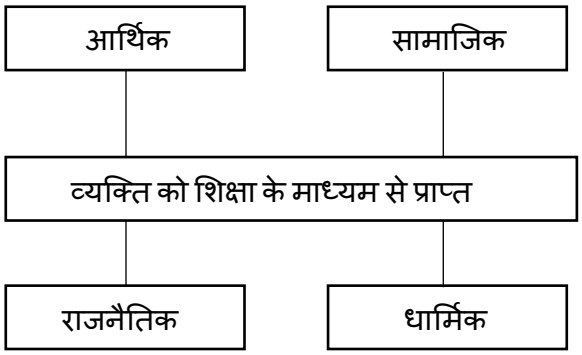

२) १) पशु = **जानवर** २) मूल्य = **कीमत**

३) स्वयं = **खुद** ४) बालक = **बेटा**

३) भारत में गाँवों में अक्सर लड़कियों को पढ़ने के लिए अधिकार नहीं दिया जाता था | लोगों का यह कथन था की लड़की सिर्फ घर का काम करने के लिए होती है और लड़के बाहर जाकर नौकरी करने के लिए | सरकार ने कई नियम कानून बनाए है जिसके अनुसार शिक्षा प्राप्त करना प्रत्येक मनुष्य का अधिकार है | इतिहास में ज्योतिबा फुले जी ने लड़कियों के शिक्षा शुरू करने का कदम उठाया था | इसी वजह से आज के युग में लड़का - लड़की सामान रूप से शिक्षित हुए है |
इसलिए यह कथन उचित होगा की शिक्षा प्राप्त करना प्रत्येक व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार है |

(ई) १) Dismiss - **पदच्युत** २) Graphic Table - **आरेखन तालिका**

३) Meteorology - **मौसम विज्ञानं** ४) Agenda - **कार्यसूची**

५) Output - **निकास** ६) Registration - **पंजीकरण**

७) Indemnity - **नामित व्यक्ति** ८) Friction - **घर्षण**

विभाग - ५ : व्याकरण - अंक : १०

कृति : ५ (अ)

१) मैं इसके परिणाम की प्रतीक्षा कर रही थी |

२) पक्षी मीठे गीत गा रहे है

३) शॉ के इन शब्दों में अहंकार की पैनी धार होगी।

४) ये सीधे वातावरण में ऊँचाई पर चले गए।

(आ)

१) दृष्टांत अलंकार

२) रूपक अलंकार

३) उत्प्रेक्षा अलंकार

४) अतिशयोक्ति अलंकार

(इ)

१) वीभत्स रस

२) शांत रस

३) अद्‌भुत रस

४) रौद्र रस

(ई)

१) **लहर को ऊपर से उतार देना** - सिर झुका कर संकट को गुजरने देना |
वाक्य - करोना के समय में देश की अर्थव्यवस्था ख़राब हो रही है , पर हमारी सरकार इस बात को न समझते हुए इस लहार को ऊपर से उतार देने का सफल प्रयास नहीं कर रही है |

२) **कंठ भर आना** - भावुक हो जाना |
वाक्य - पत्नी अपने आर्मी पती को विदा करते वक्त उसका कंठ भर आया |

३) **धरती पर निगाह रखना** - अपनी वास्तविकता के साथ जुडकर रहना ।
वाक्य - महेश ने अपने विधालय में ही नही बल्की अपने राज्य में भी टॉप किया है फिर भी वह लोगो के सामने आदर पूर्वक रहता है सच है महेश **धरती पर निगाह** रखा हुआ है ।

४) **रंग में भंग होना** - प्रसन्नता के वातावरण में विघ्न पड़ना |
वाक्य - स्वतंत्रता के अवसर पर देश के एक स्थान पर आतंकवादियों द्‌वारा आक्रमण हो जाने पर , पूरा देश का रंग में भंग हो गया |

(उ)

१) **दोष** अकेली रचना का **भी** नहीं है।

२) **उसका** सत्य का **पराजित** हो जाता हैं।

३) बैजू **हाथ** बाँधकर **खड़ा** हो गया।

४) **मैं एक** सफल सूत्र संचालक के रूप में प्रसिद्‌ध हो गया।